संस्कृत कैसे सीखें ?
How to Learn Sanskrit ?

आकृति ठाकुर[1] एवं योगेश शर्मा[2]

Aakriti Thakur[1] & Yogesh Sharma[2]

[1]शोधच्छात्रा, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

[2]सह आचार्य – कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

aakrititthakur2@gmail.com, ycsharma2000@yahoo.co.in

https://doie.org/10.10427/VP.2025896759

प्रत्ययों का विधान संस्कृत व्याकरण की शब्दार्थ व्यापार के विस्तार की प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण कारक है। क्रिया के साथ प्रयुक्त कृत प्रत्यय कृदन्त शब्दों का निर्माण करते हैं। ये शब्द क्रिया रूप में भी वाक्य में प्रयुक्त होते हैं। कहीं संज्ञा के रूप में तो कहीं विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। कृदन्त शब्द पूर्णतः धातुज होते हैं, अर्थात् इनकी निर्मिति मूल धातु से होती है और कृत/कृत्य प्रत्ययों के द्वारा क्रियापद, संज्ञा, विशेषण आदि के रूप में ये शब्द अर्थ का प्रकाशन करते हैं।

तद्धित प्रत्ययों से बनने वाले शब्द शब्दज ही होते हैं, धातुज नहीं, अर्थात् तद्धितान्त शब्दों की निर्मिति सर्वनाम, संज्ञा, विशेषण आदि से होती है और संज्ञा एवं विशेषण आदि की ही निर्मिति होती है। तद्धित प्रत्ययों की भूमिका अर्थ के प्रकाशन में एवं उसके विस्तार में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। तद्धित प्रत्ययों से अनेक नवीन शब्द निर्मित होते हैं, जिनसे भाषण के सौष्ठव एवं वैशिष्ट्य में भी सहायता मिलती है। इन प्रत्ययों से बनने वाले शब्द लेखन की सहजता और सुगमता में भी सहायक होते हैं तो अवबोध में सहजता और सुगमता का अनुभव कराते हैं। तद्धितान्त प्रत्यय सामासिक एवं श्लिष्ट भाषा की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। अलंकारशास्त्र में अलंकार प्रतिपादन, रीतिगत प्रयोग एवं वक्रोक्तिपूर्ण भाषा की दृष्टि से भी तद्धितान्त शब्दों की भूमिका देखी जा सकती है। ध्वनि और वक्रोक्ति से प्राप्त चमत्कारजनक अर्थ वैचित्र्य में तद्धितान्त शब्दों का महत्त्वपूर्ण अवदान है। कवि की सुन्दर कविता, उसमें प्रयुक्त छन्द और बन्ध की लालित्यपूर्ण संयोजना तद्धितान्त के बिना नहीं की जा सकती। हमारी संस्कृति अध्यात्म और दर्शन की संस्कृति है। इसमें परमात्मा (ईश्वर) केन्द्र में है। इसी के अन्तर्गत भक्ति एवं साधना की दृष्टि भी परिलक्षित होती है। भक्ति में सगुण एवं निर्गुण दोनों स्वरूप दिखते हैं। सगुण में वैष्णव, शाक्त और शैव आदि अनेक मत दिखते हैं। इनमें ईश्वर, चाहे वह शिव के रूप में है या विष्णु या महाशक्ति और भी अनेक नाम, सभी के सहस्त्र नाम एवं अनेक स्तोत्र भारतीय परम्परा में मिलते हैं। इन सहस्रनामपरक स्तोत्रों अथवा अन्य भक्तिपरक स्तोत्रों में स्तोत्रकार की अन्तरतम अभिव्यक्ति में तद्धितान्त शब्दों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। उदाहरणार्थ –

रोहिणीह्रदयानन्दी वसुदेवात्मजो बली ।

नीलाम्बरो **रौहिणेयो** जरासन्धवधोऽमलः ।।

गोपालसहस्रनाम के इस श्लोक में श्रीकृष्ण के लिए **रौहिणेय** शब्द का प्रयोग किया गया है। इस तद्धितान्त शब्द की निर्मिति ढक् नामक प्रत्यय से हुई है, जिसका अर्थ है – रोहिणी के पुत्र अर्थात् बलराम के रूप में श्रीकृष्ण। इसी प्रकार एक अन्य श्लोक को देखें –

श्रीपतिः पुण्डरीकाक्षः पद्मनाभो जगत्पतिः ।

वासुदेवोऽप्रमेयात्मा **केशवो** गरुडध्वजः ।।

प्रस्तुत श्लोक के अन्तर्गत अपत्य अर्थ में वासुदेव और सम्पन्नता के अर्थ में केशव नामक तद्धितान्त शब्दों का प्रयोग दृष्टिगत होता है, जिनपर आगे विस्तृत चर्चा की जाएगी।

वस्तुतः तद्धितान्त शब्द भाषा को समृद्ध करते हैं। जैसा कि प्रायशः देखने में आता है कि सभी शब्द जो नाम के रूप में संसार में प्रयुक्त होते हैं, उन सभी का आधार धातु ही होती है। धातु के साथ कृतादि प्रत्यय उन नामरूप शब्दों की निर्मिति करते हैं, किन्तु कृतादि प्रत्ययों से निर्मित शब्दों की अपनी एक सीमा होती है। इन कृतादि प्रत्ययों से निर्मित शब्दों का विस्तार तो सही में तद्धित प्रत्ययों से ही होता है। इसलिए तद्धित प्रत्ययों के सन्दर्भ में कहा जाता है कि 'तस्मै हिताः', अर्थात् उनके (कृदन्त शब्दों के) हितकारक तद्धित प्रत्यय होते हैं और शब्द की अनन्त सीमा की सम्भावना का प्रकाशन करते हैं। परिणामस्वरूप भाषा समृद्ध बनती है। यदि व्याकरण में इन प्रत्ययों का विधान नहीं होता तो सुन्दर, लालित्यपूर्ण, अर्थगम्भीर, सरस एवं कौशलपूर्ण संवाद, सम्प्रेषण, काव्य आदि की सम्भावना ही क्षीण हो जाती। अब मन में प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या हैं ये तद्धित प्रत्यय? भाषा में इनका प्रयोग कैसे होता है? इनका स्वरूप कैसा है? इसे निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है–

1. **अपत्य अर्थ में तद्धित प्रत्ययों का प्रयोग** – व्याकरण में तद्धित प्रत्ययों के अनेक अर्थों में प्रयोग मिलते हैं। जैसे अपत्य (सन्तान आदि के अर्थ में) अर्थ में। जब भी कभी हमें किसी भी व्यक्ति का परिचय उसके पिता के परिचय द्वारा देना हो तो अपत्यार्थक प्रत्ययों का विधान किया जाता है। जैसे– **वासुदेव** शब्द कृष्ण द्योतक है। वासुदेव शब्द का आधार है वसुदेव, जो श्रीकृष्ण के पिता हैं। इस वसुदेव शब्द में अपत्यार्थक अण् प्रत्यय के प्रयोग से वासुदेव की निर्मिति होती है। इसका अर्थ है – वसुदेव के जो पुत्र (अपत्य) हैं, वे वासुदेव अर्थात् श्रीकृष्ण।

ऐसे और भी अनेक शब्द बनते हैं और स्थान–स्थान पर उनका प्रयोग हमें देखने को मिलता है। श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थ हम सभी ने पढ़ा है। इस ग्रन्थ में अपत्यार्थक अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है। यदि हमें इन प्रत्ययों का प्रयोग ज्ञात हो तो ग्रन्थ में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ भी सरलता से निकल जायेगा। उदाहरणार्थ–

"देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य **भारत**"

इस श्लोकांश में भारत शब्द का प्रयोग अर्जुन के लिए है, जिसका अर्थ है 'भरत का पुत्र अर्जुन' अर्थात् अर्जुन राजा भरत के वंशज हैं।

"तस्मादुत्तिष्ठ **कौन्तेय** युद्धाय कृतनिश्चय"

इस श्लोकांश में कौन्तेय शब्द भी अर्जुन के लिए आया है, जिसका अर्थ है 'कुन्ती के पुत्र अर्जुन'। इस प्रकार हम श्रीराम को **राघव** कहते हैं। इस शब्द में भी अपत्यार्थक अण् प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। राघव का तात्पर्य है 'रघु के वंशज राम'। एक और बहुप्रचलित शब्द है **मानव**, जिसका तात्पर्य है – 'मनु के वंशज', अर्थात् हम सभी मनु के वंशज हैं, इसलिए मानव हैं। मनु शब्द में अपत्यार्थक अण् के प्रयोग से मानव शब्द की निर्मिति होती है। ऐसे और भी अनेक शब्द देखे जा सकते हैं, जैसे–

क्रम संख्या	तद्धितान्त शब्द	अर्थ
1.	राधेय	राधा का पुत्र अर्थात् कर्ण
2.	वैनतेय	विनता का पुत्र अर्थात् गरूड़
3.	दाशरथि	दशरथ के पुत्र अर्थात् राम आदि
4.	भारद्वाज	भरद्वाज के पुत्र

5.	जामदग्नि	जमदग्नि के पुत्र अर्थात् परशुराम
6.	वैश्वामित्र	विश्वामित्र के पुत्र अर्थात् मधुच्छन्दा
7.	भार्गव	भृगु के पुत्र अर्थात् शुक्राचार्य
8.	सौमित्र	सुमित्रा के पुत्र अर्थात् लक्ष्मण
9.	पौत्र	पुत्र का पुत्र अर्थात् तीसरी पीढी
10.	दौहित्र	दुहिता का पुत्र अर्थात् तीसरी पीढी

इस प्रकार अनेक ऐसे शब्द हैं, जिनमें भिन्न–भिन्न प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है और जो व्यक्ति विशेष की वंशपरम्परा और वंशवृक्ष के द्योतक हैं। इसी प्रकार गोत्र आदि के सन्दर्भ में भी ये प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। जैसे–

क्रम संख्या	**तद्धितान्त शब्द**	**अर्थ**
1.	गार्ग्य	गर्ग के गोत्र के
2.	वात्स्य	वत्स के गोत्र के
3.	वासिष्ठ	वसिष्ठ के गोत्र के
4.	पाराशर	पराशर के गोत्र के
5.	आत्रेय	अत्रि के गोत्र के
6.	आंगिरस	अंगिरा के गोत्र के
7.	काश्यप	कश्यप के गोत्र के

इन प्रत्ययों से न केवल वंश और ऋषि–आधारित गोत्र का बोध होता है, जो सामाजिक संरचना के बोधक हैं, अपितु अन्य अनेक तत्कालीन और समकालीन सामाजिक सन्दर्भ का संकेत भी मिलता है। जैसे – अपत्य (सन्तान आदि) आदि का अधिकार कौन–सी पीढ़ी तक सन्तान की तरह देखा जाता है और कब वह गोत्र की संज्ञा प्राप्त कर लेता है? हम युवा किसको कहेंगे, इत्यादि–इत्यादि। इन सभी प्रश्नों का उत्तर हमें इन तद्धित प्रत्ययों के प्रयोग विधान से ज्ञात होता है।

"**अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम्**" अर्थात सन्तति आदि की विवक्षा से ही पुत्र के पुत्र द्योतन से उसकी तीसरी पीढ़ी पूर्व अर्थात पिता के पिता की गोत्र संज्ञा होती है।

इसी प्रकार "**जीवति तु वंश्ये युवा**" अर्थात् प्रपितामह के जीवित रहते यदि उनका कोई प्रपौत्र (पौत्र का पुत्र) है तो उसकी युवा संज्ञा होती है। जैसे – महाभारत में पितामह भीष्म के जीवित रहते अभिमन्यु को युवा कहा जा सकता था, अर्थात् प्रथम पीढ़ी के जीवित रहते चतुर्थ पीढ़ी ही युवा कही जा सकती थी।

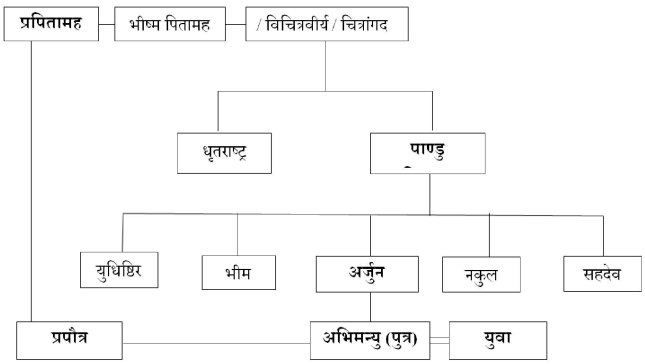

2. **विभक्ति अर्थ में तद्धित प्रत्ययों का प्रयोग** – अपत्यादि के पश्चात् तद्धित प्रत्ययों विभक्ति आदि अर्थों के सन्दर्भ में प्रयुक्त विधान पर विचार करते हैं। जैसा कि पूर्व के लेखों में विभक्ति का सामान्य परिचय दिया जा चुका है कि संस्कृत में वाक्य निर्माण में विभक्तियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। ये विभक्तियाँ सात होती हैं जिनसे कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध एवं अधिकरण का बोध होता है। इन विभक्तियों के लिए संस्कृत व्याकरण 21 सुँप् प्रत्ययों की व्यवस्था है, जिनके आधार पर रामः, रामम्, रामेण, रामाय, रामात्, रामस्य, रामे आदि शब्द निर्मित होकर क्रमशः 'राम (कर्ता), राम को (कर्म), राम के द्वारा (करण), राम के लिए (सम्प्रदान), राम से पृथक् (अपादान), राम का (सम्बन्ध) और राम में (अधिकरण)' का बोध कराते हैं, किन्तु संस्कृत व्याकरण में तद्धित प्रत्ययों के अन्तर्गत इन विभक्तियों में से कुछ विभक्तियों के बहुत सरल और सुगम विधान मिलते हैं। जैसे कस्मिन् के स्थान पर **कुत्र** (कहाँ पर)। कुत्र शब्द में त्रल् प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। इसके अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं –

क्रम संख्या	तद्धितान्त शब्द	अर्थ
1.	यत्र	यहाँ
2.	तत्र	वहाँ
3.	सर्वत्र	सभी जगह
4.	इह	यहाँ
5.	यर्हि	जब
6.	कर्हि	कब
7.	तर्हि	तब
8.	एतर्हि	अब/इस समय

इसी प्रकार तसिँल् प्रत्यय का प्रयोग पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में होता है, जिससे **कुतः**, **दक्षिणतः**, **ग्रामतः** आदि शब्दों की निर्मिति होती है। सप्तमी विभक्ति के अर्थ में प्रयुक्त कालवाची शब्दों के साथ 'दा' तद्धित प्रत्यय का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ–

क्रम संख्या	कालवाची शब्द		शब्द	अर्थ
1.	सर्व		सर्वदा	हमेशा
2.	एक	+	एकदा	एक बाद
3.	किम्	दा प्रत्यय	कदा	कब
4.	यद्		यदा	जब
5.	तद्		तदा	तब

3. **सर्वनाम शब्दों के साथ तद्धित प्रत्ययों का प्रयोग** – विभक्ति अर्थ के अतिरिक्त सर्वनाम शब्दों से तद्धित प्रत्ययों के संयोग से अनेक ऐसे शब्द बनते हैं, जिनका प्रयोग लोक में बहुशः प्रचलित है। जैसे –

1. यथा (जैसे)
2. तथा (वैसे)
3. कथम् (कैसे/किस प्रकार से)

इसी प्रकार अस्मद्, युष्मद्, तद् आदि सर्वनाम शब्दों से भी तद्धित प्रत्ययों के प्रयोग से अनेक शब्द निर्मित होते हैं, जिनका प्रयोग विभक्ति अर्थ में भी होता है। इन शब्दों में –

क्रम संख्या	सर्वनाम		तद्धितान्त शब्द	अर्थ
1.	अस्मद्		अस्मदीय / मदीय	हमारा / मेरा
2.	त्वद्	+	त्वदीय	तुम्हारा
3.	युष्मद्	छ प्रत्यय	युस्मदीय	तुम्हारा
4.	तद्		तदीय	उसका
5.	इदम्		इत्थम्	इस प्रकार

सर्वनाम शब्दों से ही तद्धित प्रत्यय (वतुँप्) आदि के विधान से अनेक परिमाणवाची शब्द भी बनते हैं। जैसे–

क्रम संख्या	सर्वनाम		तद्धितान्त शब्द	अर्थ
1.	यद्		यावाम्	जितना
2.	तद्	+	तावान्	उतना
3.	एतद्	वतुँप् / घ प्रत्यय	एतावान्	इतना
4.	किम्		कियान्	कितना
5.	इदम्		इयान्	इतना

हमारे जीवन में संख्याओं की बड़ी भूमिका होती है। संख्याओं का व्यावहारिक जीवन में भी अनेक प्रकार से प्रयोग होता है। यह प्रयोग कहीं पूरण अर्थ में (पञ्चम, षष्ठ, सप्तम आदि) तो कहीं अवयववाची अर्थ में (पञ्चतय, द्वय, त्रय आदि) होता है। इन सभी में तद्धित प्रत्ययों की ही भूमिका होती है। अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं–

क्रम संख्या	तद्धितान्त शब्द	अर्थ
1.	द्वितीयः	दूसरा
2.	तृतीयः	तीसरा
3.	चतुर्थः	चौथा
4.	एकादशः	ग्यारहवाँ
5.	विंशः	बीसवाँ

ऐसे तद्धितान्त प्रयोग अनेक संस्कृत के स्तोत्रों आदि में दृष्टिगत होते हैं। यदि हमें इनका प्रयोग और अर्थ ज्ञात हो तो हमें स्तोत्रों के अर्थ समझने में सरलता रहेगी। जैसे 'देवीकवचस्तोत्र' में शक्ति के स्वरूपों को संख्याओं के माध्यम से क्रमशः बताया गया है –

प्रथमं शैलपुत्री च **द्वितीयं** ब्रह्मचारिणी, **तृतीयं** चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति **चतुर्थकम्** ।।

पञ्चमं स्कन्दमातेति **षष्ठं** कात्यायनीति च **सप्तमं** कालरात्रीति महागौरीति **चाष्टमम्**।।

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः, उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना।।

अर्थात् देवी की नौ मूर्तियाँ हैं, जिन्हें नवदुर्गा कहते हैं। उनके पृथक्–पृथक् नाम बताये गए हैं। प्रथम नाम शैलपुत्री है। दूसरी मूर्ति का नाम ब्रह्मचारिणी है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा के नाम से प्रसिद्ध है। चौथी मूर्ति को कूष्माण्डा कहते हैं। पाँचवी दुर्गा का नाम स्कन्दमाता है। देवी के छठे रूप को कात्यायनी कहते हैं। सातवाँ

कालरात्रि और आठवाँ स्वरूप महागौरी के नाम से प्रसिद्ध है। नवीं दुर्गा का नाम सिद्धिदात्री है। इस प्रकार और भी अनेक स्तोत्र हैं, जिनमें संख्याओं का प्रयोग बहुत आकर्षक विधि से किया गया है, जो तद्धित प्रत्ययों के प्रयोग से व्यवस्थित दिखता है।

4. **भाववाची शब्द के साथ तद्धित प्रत्ययों का प्रयोग** – हम अनेक ऐसे भाववाची शब्द पढ़ते और सुनते हैं, जिनका दैनिक जीवन में अधिकाँश प्रयोग होता है। जैसे– सौन्दर्य, लावण्य, माधुर्य, सादृश्य, मार्दव, सौष्ठव, आर्जव, लाघव आदि। ये सभी शब्द तद्धित प्रत्ययों के संयोग से ही बनते हैं, जो इस प्रकार हैं–

क्रम संख्या	प्रत्यय विधान	तद्धितान्त शब्द	अर्थ
1.	सुन्दर + ष्यञ्	सौन्दर्य	सुन्दरता
2.	लवण + ष्यञ्	लावण्य	सुन्दरता
3.	मधुर + ष्यञ्	माधर्य	मधुरता
4.	सदृश + ष्यञ्	सादृश्य	समानता
5.	सुरभि + ष्यञ्	सौरभ्य	सुगन्धित
6.	सुजन + ष्यञ्	सौजन्य	सुजनता
7.	सुभग + ष्यञ्	सौभाग्य	अच्छा भाग्य
8.	सुमनस् + ष्यञ्	सौमनस्य	अच्छी भावना
9.	सुराज + ष्यञ्	सौराज्य	सुशासन
10.	सुकुमार + ष्यञ्	सौकुमार्य	सुकुमारता
11.	सुकर + ष्यञ्	सौकर्य	सुविधा
12.	मृदु + अण्	मार्दव	कोमलता
13.	सुष्ठु + अण्	सौष्ठव	सम्यक् प्रकार से
14.	ऋजु + अण्	आर्जव	सरलता
15.	लघु + अण्	लाघव	लघुता

भाववाची शब्दों में तल् और त्व तद्धित प्रत्ययों की भूमिका होती है। उपर्युक्त दोनों प्रत्ययों से बनने वाले शब्द सामान्य बोलचाल में भी बहुत अधिक प्रचलित हैं। जैसे–

क्रम संख्या	प्रत्यय विधान	अर्थ
1.	आर्द्र + तल्	आर्द्रता
2.	मधुर + तल्	मधुरता
3.	जड + तल्	जडता
4.	कठोर + तल्	कठोरता
5.	कोमल + तल्	कोमलता
6.	मनुष्य + तल्	मनुष्यता
7.	मानव + तल्	मानवता
8.	शीतल + तल्	शीतलता
9.	जड + त्व	जडत्व
10.	द्रव + त्व	द्रवत्व

11.	ठोस + त्व	ठोसत्व
12.	घन + त्व	घनत्व
13.	प्लव + त्व	प्लवत्व

इसी प्रकार और अनेक तद्धित प्रत्यय हैं, जिनसे भाववाची अनेक नवीन शब्द निर्मित होते हैं और लालित्यपूर्ण एवं सुन्दर सम्प्रेषण होता है। यदि इन तद्धित प्रत्ययों के प्रयोग एवं प्रक्रिया को ठीक से समझ लिया जाए तो कठिन लगने वाले संस्कृत श्लोक सरल प्रतीत होंगे। नैषधीयचरित राजा नल और दमयन्ती की कथा पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण महाकाव्य है, जिसकी रचना श्रीहर्ष के द्वारा 11वीं शताब्दी में की गई। इस ग्रन्थ में एक श्लोकांश है–

"**आर्जवं** हि न कुटिलेषु नीतिः"

इस श्लोकांश में आर्जव शब्द का उल्लेख है, जिसकी प्रक्रिया पूर्व में बताई जा चुकी है। यह (आर्जव) शब्द ऋजु में अण् नामक तद्धित प्रत्यय लगने से बनता है। ऋजु का तात्पर्य है – सरल और अण् प्रत्यय भाव अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अतः आर्जव का अर्थ हुआ – सरलता।

5. **सम्पन्नता के अर्थ में तद्धित प्रत्ययों का प्रयोग** – लोक में जितने भी शब्द व्यक्ति, गुण, वस्तु आदि से सम्पन्न व्यक्ति अथवा वास्तु के सम्बन्ध में प्रयुक्त होते हैं, लगभग वे सभी शब्द तद्धित प्रत्ययों के संयोग से निर्मित होते हैं। जैसे – धन से सम्पन्न धनवान्, बुद्धि से सम्पन्न बुद्धिमान्, गुणों से सम्पन्न गुणवान्, शील से सम्पन्न शीलवान्, बल से सम्पन्न बलवान्, आदि ऐसे अनेक शब्द हैं, जिनमें मतुँप्, लच्, श, इलच्, न, उरच्, व, ठन्, विनिँ, ग्मिनिँ आदि अनेक प्रत्यय होते हैं। मत्वर्थीय प्रत्ययों से बनने वाले कुछ शब्दों की सूची इस प्रकार है–

क्रम संख्या	प्रत्यय विधान	तद्धितान्त शब्द	अर्थ
1.	गो + मतुँप्	गोमान्	गायों से सम्पन्न
2.	चूडा + लच्	चूडाल	केश या मुकुट वाला
3.	लोम + श	लोमेश	बालों वाला
4.	लोम + मतुँप्	लोमवान्	बालों वाला
5.	दन्त + उरच्	दन्तुर	ऊँचे दांत वाला
6.	केश + व	केशव	उत्तम केशों से सम्पन्न
7.	दण्ड + इन	दण्डी	दण्ड वाला
8.	यशस् + विनिँ	यशस्वी	यश से सम्पन्न
9.	मेधा + विनिँ	मेधावी	बुद्धि से सम्पन्न
10.	वाच् + ग्मिनिँ	वाग्मी	अच्छी वाणी वाला
11.	माया + विनिँ	मायावी	माया वाला

6. **तुलना एवं श्रेष्ठता के बोध में तद्धित प्रत्ययों का प्रयोग** – आप सभी ने एक श्लोक अवश्य पढ़ा होगा–

अपि स्वर्णमयी लंका लक्ष्मण में रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि **गरीयसी**।।

इस श्लोक में गरीयसी शब्द का उल्लेख है, जिसका अर्थ है तुलनात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ अर्थात् स्वर्ग की तुलना में जननी (जन्म देने वाली माता) एवं जन्मभूमि (जिस पर हम जन्म लेते हैं) श्रेष्ठ होते हैं। इस गरीयसी

शब्द में ईयसुन् नामक तद्धित प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार की तुलनात्मक श्रेष्ठता को बताने के लिए तरप् प्रत्यय का भी प्रयोग होता है। जैसे – पटुतर, अधिकतर, श्रेष्ठतर आदि। इसी प्रकार सर्वश्रेष्ठ के बोध के लिए इष्ठन् एवं तमप् प्रत्ययों का विधान है। इन प्रत्ययों से बनने वाले शब्द, जैसे – श्रेष्ठ, लघुतम, महत्तम, सर्वोत्तम, उच्चतम, श्रेष्ठतम, गरिष्ठ, बलिष्ठ, वरिष्ठ आदि हैं। प्रत्यय विधान एवं अर्थ की दृष्टि से इन शब्दों का यहाँ सूचीकरण किया जा रहा है, जिससे अवबोध में सहायता मिलेगी।

क्रम संख्या	प्रत्यय विधान	तद्धितान्त शब्द	अर्थ
1.	लघु + तमप्	लघुतम	सबसे छोटा
2.	महत् + तमप्	महत्तम	सबसे बड़ा
3.	सर्व + उद् + तमप्	सर्वोत्तम	सबसे अच्छा
4.	उच्च + तमप्	उच्चतम	सबसे ऊँचा
5.	गुरू + इष्ठन्	गरिष्ठ	सबसे भारी
6.	गुरू + ईयसुन्	गरीयस्	अपेक्षाकृत भारी
7.	गरू + इयनिच्	गरिमन्	भारी
8.	बल + इष्ठन्	बलिष्ठ	सबसे बलवान्
9.	वर + इष्ठन्	वरिष्ठ	सबसे बड़ा
10.	शुद्ध + तमप्	शुद्धतम	सबसे शुद्ध

इस प्रकार इस लेख में हमने यह समझने का प्रयास किया है कि किस प्रकार तद्धित प्रत्यय कृदन्त शब्द एवं अन्य सामान्य शब्दों के साथ संयुक्त होकर अपार शब्द–संसार की निर्मिति करते हैं एवं हमें कविरूप प्रजापति एवं शब्दवान् बनाते हैं। पूर्व के लेख एवं इस लेख के माध्यम से हमने कृदन्त एवं तद्धितान्त शब्दों की योजना को समझा है। अग्रिम अंक में स्त्री प्रत्ययों एवं उनसे निर्मित शब्दों को समझेंगे। साथ ही शब्दों के पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग के विधान पर भी गहराई से विचार करेंगे। इस लेख के अन्त में अभ्यास हेतु तद्धित प्रत्यय आधारित शब्दों को कुछ वाक्यों के अन्तर्गत रखा जा रहा है, जिससे पाठकों को संस्कृत भाषा को समझने में सहायता मिलेगी।

अनुवाद

1. वयं सर्वे प्राजापत्याः सन्ति।

   (हम सभी प्रजापति की सन्तति हैं।)

2. वात्स्यः महाकविबाणः कादम्बरीहर्षचरितयोः प्रणेता।

   (वत्स गोत्रीय महाकवि बाण कादम्बरी और हर्षचरित के प्रणेता हैं।)

3. योगशास्त्रस्य ज्ञानाय योगवासिष्ठस्य सम्यक्तया अध्ययनं कर्त्तव्यम्।

   (योगशास्त्र के ज्ञान हेतु योगवासिष्ठ का सम्यक् प्रकार से अध्ययन करना चाहिए।)

4. कमला यत्र राधया सह आगच्छति।

   (कमला यहाँ राधा के साथ आती है।)

5. त्वं कुत्र निवससि?

   (तुम कहाँ रहते हो?)

6. यदा भवान् परिश्रमं करोति, तदैव स्वकार्ये सफलं भविष्यति।
   (जब आप परिश्रम करते हैं, तभी आप अपने कार्य में सफल होंगे।)
7. राजा अशोकः कदा आसीत्?
   (राजा अशोक कब थे?)
8. भीमः पाण्डवेषु बलिष्ठः आसीत्।
   (भीम पाण्डवों में बलिष्ठ थे।)
9. रामः कक्षायाम् अन्येषु छात्रेषु पटुतमः अस्ति।
   (राम कक्षा में अन्य छात्रों में अधिक पटु है।)
10. गोवा इति भारतस्य लघुतमं राज्यं वर्तते।
    (गोवा भारत का सबसे छोटा राज्य है।)
11. पौराणिककथानुसारेण भस्मासुरः एकः मायावी राक्षसः आसीत्।
    (पौराणिक कथा के अनुसार भस्मासुर एक मायावी राक्षस था।)
12. मनुष्यत्वम् एव मनुष्यानां धर्मजातिश्च।
    (मनुष्यत्व ही मनुष्यों की धर्म और जाति है।)
13. मासेषु चैत्रमासः इति प्रथमः।
    (मासों में चैत्र प्रथम है।)
14. राजाविक्रमादित्यस्य सौराज्यस्य वर्णनम् अनेकेषु ग्रन्थेषु उपलब्धम् अस्ति।
    (राजा विक्रमादित्य के सौराज्य/सुशासन का वर्णन अनेक ग्रन्थों में उपलब्ध है।)
15. इत्थं सुसंगतिः कल्याणकारी भवति।
    (इस प्रकार सुसंगति कल्याणकारी होती है।)